चन्द्रगुप्त नाटक

'मैं त्रार्य वीर हूँ, है मुफे—

मरने की परवाह क्या ?

जब कृद पड़ा ररणभृमि में,

तब जीने की चाह क्या ?'

(श्रंक ४.)

बदरीनाथ भट्ट बी॰ ए॰